शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2014

शोध-प्रविधि में विषय-चयन

फ़खरून्निसा कादरी एवं रफत जमाल
अतिथि व्याख्याता (उर्दू)
बरकतउल्ला वि.वि. भोपाल, म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

शोध के व्यावहारिक पक्ष में विषय-चयन कठिनतर कार्य है। प्रायः देखा गया है कि विद्यार्थी को शोध की ललक होती है, कार्य कर लेने का उत्साह भी होता है उसमें, किन्तु उसे अपनी अभिरूचियों तथा क्षमता का ज्ञान नहीं होता। यही कारण है कि जब वह पंजीकरण-अधिकारी के सम्मुख पहुँचता है, उसके पास कोई विषय या साहित्यिक समस्या ऐसी नहीं होती जिस पर वह शोध-कार्य करने को मन बना रहा हो। परिणामतः वह कहने लगता है- विषय आप कोई भी सुझा दें, मैं कार्य करना चाहता या चाहती हूँ। यह उत्तर इतना भ्रामक और दूषित होता है कि यदि पंजीकरण अधिकारी अध्यापक होने के नाते विद्यार्थी के प्रति सहानुभूति का स्वाभाविक शिकार न हो तो वह साक्षात्कार में ही उसकी छँटनी कर देगा। शोध-छात्र बनने के जिज्ञासु को अपनी अभिरूचि और क्षमता का ज्ञान होना चाहिए। उसे विदित होना चाहिए कि किस क्षेत्र में उसकी गति है, कौनसा विषय उसे भाता है, किस पहलू पर कार्य उसे सुविधापूर्ण होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी प्रश्न पर विचार किया गया है।

विषय-चयन

एक विद्वान् का कथन है कि यदि शोध विषय अनुसंधाता की इच्छानुसार चयित न होकर अधिकारियों द्वारा प्रदत्त हो, तो वह किसी भी स्थिति में ज्ञान के वर्तमान क्षेत्र को आगे नहीं बढ़ा सकता। न ही उस विषय पर किया गया शोध अभियान किसी अज्ञात तथ्य को ज्ञात बनाने में सक्षम होता है। यही कारण है कि विषय-चयन शोधर्थी के गतिशील होने में अत्यधिक आवश्यक तत्व होता है किन्तु दुर्भाग्यवश लोग इसी की सर्वाधिक उपेक्षा कर देते हैं। यहाँ इसी उपेक्षा के विरुद्ध हमें कुछ नियमों, सिद्धांतों और पद्धतियों की चर्चा करना है।

योजनाबद्ध विषय

विषय चयन कुछ ही विश्वविद्यालयों की विभूति हो सकता है। उदाहरणार्थ, पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला में योजनाबद्ध शोध-कार्य की महती सम्भावना हो सकती है। यहाँ के स्थानीय एवं निकटवर्ती नगरों के कतिपय पुस्तकालयों में हजारों की संख्या मं ऐसी अछूती पांडुलिपियाँ मौजूद हैं जो विविध साहित्यिक विषयों पर गुरूमुखीलिपि में लिखी गई हैं और जिनकी भाषा ब्रज है। यह साहित्य आज तक हिन्दी जगत् के लिए इसलिए अज्ञात रहा कि हिन्दी के विद्वान् गुरूमुखी लिपि से परिचित नहीं थे और पंजाबी के विद्वानों ने ब्रजभाषा देखकर उसकी उपेक्षा कर दी।

यह एक सर्वमान्य विषय है कि शोध की क्रिया विस्तार से गहनता की ओर आती है। पिछले

तीस वर्षों से हिन्दी में पर्याप्त एवं तीव्र गति से शोध-कार्य चल रहा है। इस काल में विस्तारगत विषयों पर बहुत लिखा जा चुका है। अब हिन्दी शोध विस्तार के अन्तर्गत गहन और सूक्ष्म विषयों के निर्वाचन की ओर बढ़ रहा है। बहुत-सा ज्ञान अभी अस्पष्ट है, अनेक तत्व अभी तक वायवीय हैं, उन्हें आकार देना अभी शेष है। अब तक साहित्यिक क्षेत्र में केवल ऐसा अनुसंधान हुआ है जिसमें अज्ञात रचनाओं, साहित्यिकारों की स्थापना की गई या ज्ञात कृतियों तथा कृतिकारों का परीक्षण, पुनर्मूल्यांकन किया गया है। आवश्यकता है कि हम साहित्य की उन प्रवृत्तियों, पृष्ठभूमियों और पद्धतियों का यथार्थ ज्ञान साहित्य प्रेमियों को दे सकें, जिससे उनके सांस्कृतिक और जातीय जीवन में नवालोक का उदय हो सके और राष्ट्र का दिशा-निर्देश सम्भव हो। उक्त तथ्यों को लक्ष्य करते हुए जब विषय-चयन का प्रश्न उठता है, तो हमें अनेक बातों का ध्यान रखना होता है।

अभिरुचि

शोध जिज्ञासु को विषय का चुनाव स्वयं करने की छूट दी जानी चाहिए। किसी भी स्थिति में वहाँ पर अभिरुचि के विरुद्ध कोई विषय लादना अनुपयुक्त होगा। अभिरुचि से भिन्न विषय पर कार्य करना प्रायः शोध जिज्ञासु के लिए सुखद अध्ययन की अपेक्षा बोझ ढ़ोने के समान होगा। शोधार्थी की अभिरुचि का ध्यान रखना पंजीकरण समिति के लिए जरूरी है। ऐसी स्थितियाँ भी देखी गई हैं जहाँ विद्यार्थी को स्वयं अपनी अभिरुचि का ज्ञान नहीं होता, पूछने पर साहित्य की दो-तीन विधाओं पर वह एक साथ रुचि प्रदर्शित करता है, किन्तु ऐसा सम्भव प्रतीत नहीं होता। शोक की अभिरुचि को समझने के लिए उसके द्वारा आम तौर पर पढ़ी जाने वाली पुस्तकों से भी अनुमान किया जा सकता है। कहानी, उपन्यास या नाटक के क्षेत्रों में तो यह अनुमान शतषः सही बैठता है।

क्षमता और मनोवृत्ति

विषय-चयन से पूर्व शोध जिज्ञासु की क्षमता और मनोवृत्ति का भी ठीक-ठीक अन्दाज होना चाहिए। प्रायः देखा गया है कि स्त्रियों की क्षमता क्षेत्रीय कार्यों में कम होती हैं। पुरुष विषयों में सक्षम हो सकते हैं। पूर्णतः अज्ञात विषयों में, जहाँ पुरातत्व की सहायता से साहित्यकारों की जीवनियाँ आदि निश्चित करनी होती हैं, स्त्रियों की गति नहीं होती। तात्पर्य यह कि स्त्री-पुरुष भेद, बौद्धिक परिपक्वता तथा साधन जुटाने की क्षमता के भेदों की सम्मुख रखते हुए ही किसी जिज्ञासु के लिये शोध विषय का चुनाव किया जाना चाहिये।

विषय की उपयोगिता

विषय का निर्वाचन करते समय उसकी उपयोगिता का ध्यान भी अनिवार्य है। व्यर्थ के तत्वों पर दो-तीन वर्ष लगाकर प्रस्तुत किया गया शोध-प्रबंध न तो शोधक के भविष्य में आलोक-किरण उत्पन्न करता है और न साहित्य जगत् के लिये कोई नवीन उपलब्धि होती है। अतः हमारे जातीय जीवन अथवा सामाजिक चिन्तन में क्रांति लाने वाला शोध-कार्य न भी हो, साहित्य जगत् में नवीन जानकारी प्रस्तुत करने वाला तो होना ही चाहिए।

उपयुक्तता

विषय की उपयोगिता के साथ-साथ उपयुक्तता भी अनिवार्य है। कई बार विषय-पद, शीर्षक विषय के प्रति स्पष्ट नहीं होता। उस अस्पष्टता का परिणाम यह होता है कि शीर्षक और प्रबंधन की सामग्री दोनों अलग-अलग हो जाते हैं। हमने स्वयं वर्षों पूर्व जब शोध पंजीकरण प्राप्त करना चाहा था, तो मन गुरूनानक काव्य का दार्शनिक दृष्टि से अनुशीलन करने की इच्छा थी और आवेदन-पत्र में विषय के स्थान पर हमने लिखा 'गुरूनानक काव्य के दार्शनिक आधार'। विषय जब स्वीकृत हो गया और निर्देशक नियुक्त कर दिये गये तो उनसे पहली ही भेंट में अपनी भूल समझ में आ गई। स्पष्ट ही आधार का अध्ययन करते समय हमें गुरूनानक काव्य में आये दार्शनिक तत्वों को गौण और भारतीय औपनिषदिक चिन्तनधारा को, जो कि गुरूनानक काव्य का आधार है, प्रमुखता देनी पड़ती। इससे कवि की रचना का दार्शनिक अनुशीलन गौण हो जाता और उसकी पृष्ठभूमि उभरकर सामने आती है। इस प्रकार की अनेक अशुद्धियाँ असावधानीवश विषय-चयन में हो जाया करती है, जिनका ध्यान रखना शोधर्थी तथा पंजीकरण समिति, दोनों के लिये आवश्यक है।

पूर्व ज्ञान

विषय चयन के समय शोधर्थी के पूर्व ज्ञान की जाँच भी कर लेनी चाहिये। जिस विषय को वह अध्ययनार्थ प्रस्तुत कर रहा है क्या उस विषय में पहले से ही शोधार्थी की कुछ गति है, यदि नहीं तो क्या उसने शोध-विषय के रूप में प्रस्ताव करने से पूर्व उक्त संबंध में कुछ अध्ययन किया है, या कोई पृष्ठभूमि तैयार की है ? इन सभी स्थितियों में यदि शोधार्थी ने कोई प्रयास नहीं किया तो क्या उक्त क्षेत्र में कार्य करने की छूट देनी चाहिये ? पंजीकरण समिति को इस पर विचार करना चाहिए।

सामग्री सुलभता की सम्भवना

विषय-चयन के लिये सामग्री सुलभता की सम्भवना एक महत्वपूर्ण आधार है। शोध जिज्ञासु को केवल उसी क्षेत्र में विषय-चयन करना चाहिए जिस क्षेत्र में उसे सुगमतापूर्वक सामग्री उपलब्ध हो जाने की सम्भावना हो। ऐसे विषय जिन पर संबद्ध सामग्री का उपलब्ध हो सकना कठिन हो, प्रायः गले का ढ़ोल बन जाया करते हैं। निर्देशक को चाहिये कि वह शोधक को इस देशा में पहले से सावधान कर दे। पंजीकरण समिति के विद्वानों को भी इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए।

तात्पर्य यह है कि विषय निर्वाचन एक महत्वपूर्ण और कठिन प्रक्रिया है, जिस पर कोई निर्णय लेने से पूर्व भली-भाँति विचार कर लिया जाना चाहिए। ऊपर चर्चित तत्वों का ध्यान रखते हुए शोधक के लिंग, बौद्धक स्तर और सामग्री उपलब्धि के अनुकूल विषय निश्चित किया जाना चाहिए। एक बार विषय के निश्चित हो जाने पर बार-बार मन विचलित नहीं होना चाहिए और शोधार्थी को दत्तचित्त होकर अपनी समस्त शक्तियों को विषय में अनुकूल सुयोग्य शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने में लगा देना चाहिए।

संदर्भ

1 अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत एवं प्रक्रिया, एस.एन गणेषन प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
2 रिसर्च मैथडलाजी, डॉ.आर.एन.त्रिवेदी, डॉ.डी.पी शुक्ला, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
3 पंचशील प्रकाशन, किल कॉलोनी चौड़ा रास्ता जयपुर,

4 हिन्दी शोध तंत्र की रूपरेखा, मनमोहन सहगल,
पंचशील प्रकाशन, जयपुर, मूलचंद गुप्ता